देव

काव्यांश 1

देव

काव्यांश 1

विषय-
1. इसमें सवैया छंद का प्रयोग किया गया है।
2. 'कटि किंकिनि कै', 'पट पीत', 'हिये हुलसै', 'जै जग' इत्यादि में अनुप्रास अलंकार है।
3. 'मुखचंद्र' तथा 'जग-मंदिर' रूपक अलंकार का उदाहरण है।
4. कृष्ण के रूप और वेशभूषा का वर्णन है।
5. इसकी भाषा ब्रज है।
6. श्रृंगार रस विद्यमान है।

काव्यांश 2

विषय-
1. 'केकी कीर', 'हलावै-हुलसावै', 'पूरित पराग', 'सिर सारी', 'मदन महीप', 'बालक बसंत' इत्यादि में अनुप्रास अलंकार की छटा बिखरी हुई है।
2. इसकी भाषा ब्रज है।
3. वसंत ऋतु का सुंदर वर्णन है।
4. पूरे काव्यांश में मानवीकरण अलंकार की छटा भी विद्यमान होती है।
5. 'कंजकली नायिका' में रूपक अलंकार की भी छटा बिखरी हुई है।
6. इसकी रचना कवित्त छंद में हुई है।

काव्यांश 3

देव

काव्यांश 1

विषय-
1. इसमें सवैया छंद का प्रयोग किया गया है।
2. 'कटि किंकिनि कै', 'पट पीत', 'हिये हुलसै', 'जै जग' इत्यादि में अनुप्रास अलंकार है।
3. 'मुखचंद्र' तथा 'जग-मंदिर' रूपक अलंकार का उदाहरण है।
4. कृष्ण के रूप और वेशभूषा का वर्णन है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

5. इसकी भाषा ब्रज है।
6. श्रृंगार रस विद्यमान है।

काव्यांश 2

विषय-
1. 'केकी कीर', 'हलावै-हुलसावै', 'पूरित पराग', 'सिर सारी', 'मदन महीप', 'बालक बसंत' इत्यादि में अनुप्रास अलंकार की छटा बिखरी हुई है।
2. इसकी भाषा ब्रज है।
3. वसंत ऋतु का सुंदर वर्णन है।
4. पूरे काव्यांश में मानवीकरण अलंकार की छटा भी विद्यमान होती है।
5. 'कंजकली नायिका' में रूपक अलंकार की भी छटा बिखरी हुई है।
6. इसकी रचना कवित्त छंद में हुई है।

काव्यांश 3

विषय-
1. 'सिलानि सौं सुधार्यौ सुधा', 'तारा सी तरुनि तामें', 'मिल्यो मल्लिका को मकरंद' इत्यादि में अनुप्रास अलंकार की छटा बिखरी हुई है।
2. 'फटिक सिलानि सौं', उद्धि दधि को सो', 'दूध को सो फेन', 'तारा सी तरुनि', 'आरसी से अंबर में आभा सी उजारी लगै' इत्यादि में उपमा अलंकार है।
3. 'प्यारी राधिको को प्रतिबिंब सो लागत चंद' में व्यतिरेक अलंकार है।
4. इसकी रचना कवित्त छंद में हुई है।
5. इसकी भाषा ब्रज है।
6. श्रृंगार रस विद्यमान है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in